20 शताब्दी की शुरुआत में समाज का पूर्ण रूप से कोई भी विषय अध्ययन नहीं करता। जहाँ समाजशास्त्र पूर्ण रूप से शहरी समाज का वर्ग अध्ययन करता था वहीं मानवशास्त्र पूर्ण रूप से मात्र जनजातीय समाज या ग्रामीण समाज या आदिवासी समाज का अध्ययन करता था। यहाँ यह स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्र शहर में केन्द्रित था और Anthro ग्रामीण क्षेत्र में। तब तक समाज जिसे हम Peasant Society कहते हैं। जो आधे रूप में शहरी समाज से जुड़ा था और आधे रूप से ग्रामीण समाज इनका अध्ययन किसी ने नहीं किया। इस प्रकार के प्रभावों के कारण Redfield ने इस समुदाय को — 7

ये स्थिति के कारण Redfield ने इस समुदाय को Part society with Part culture कहा।

~ Robbet Redfied सन् 1930 में मैक्सीकन के एक समुदाय जिसे हम TEPOTZLAN के नाम से जानते हैं का अध्ययन किया और उनके ग्रामीण सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के अध्ययन करने के पश्चात अपनी बहुचर्चित पुस्तक A MEXICAN VILLAGE: A STUDY OF FOLK LIFE। इस पुस्तक में उन्होंने इस अवधारणा की चर्चा की जिसे हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं।

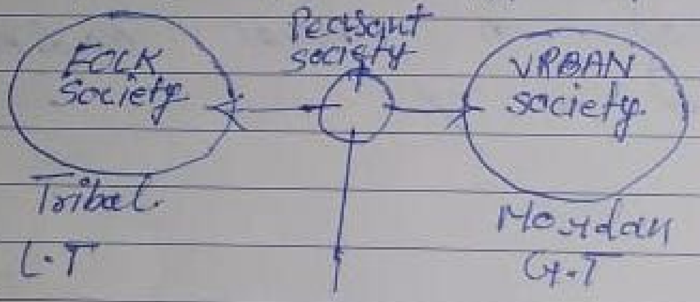

यह कृषक समाज अनेकों बार ग्रामीण एवं शहरी समाजों से भी सम्पर्क करता था और इसमें और अपने कृषि के उत्पादन के लिए बाजार होने के सम्पर्क में रहता है।

यहाँ Robert Re. ने इस अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए जो जनजातीय समाज के लघु परम्परा तथा दीर्घ परम्परा के उदाहरण के द्वारा समझाने का प्रयास किया। उसमें पहले रहे

little Tradition

Urban society को Great Tradition

स्पष्ट कर दें कि उस काल में सामाजिक वैज्ञानिकों को नव उद्विकासवाद में रुचि के कारण उन्हें लगा कि यह भी एक नवउद्विकासवाद की प्रक्रिया हो सकती है जहाँ एक जनजातिय समाज उद्विकास के क्रम में एक कृषक समाज बनेगा और उसके पश्चात वह एक आधुनिक समाज अन्ततः बन जाएगा। अपनी इस अवधारणा को Robert ने Folk URBAN CONTINUUM में दर्शाया है। यहाँ continuum का अर्थ सतत प्रक्रिया से है और Redfild यहाँ एक जनजातिय समाज किस प्रकार से आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपने उत्पादन के व्यवहार में परिवर्तन लाएगा और फिर वह एक कृषक समाज बनेगा और अन्ततः शहर के नियन्तर सम्पर्क में होने के कारण अन्ततः वह आधुनिक समाज या urban समाज बन जाएगा। यहाँ Robert कहते हैं कि इस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन में एक कृषक समाज ही जनजातिय समाज के सांस्कृतिक समाज तत्व एवं परम्पराओं को शहरी समाज तक लाता है और ठीक उसी प्रकार यही कृषक समाज शहरी परम्परा तथा संस्कृति को जनजातिय समाज तक ले जाता है। Robert Redfild यह मानते हैं कि ग्रामीण एक कृषक समाज जनजातिय समाज एक

बनेगा और फिर वहाँ समाप्त
एक आधुनिक समाज या शहरी समाज
में परिवर्तन हो जाएगा।
इसी अवधारणा को हम ग्रामीण
Folk urban continuum कहते हैं।

Robert Redfield छोटी महान
कहने के लिए और एक अवधारणा के
विषय में चर्चा करते जिसे हम
Little T या G.T के नाम
से जानते हैं। लघु परम्परा एक
ग्रामीण समाज या एक जनजातिय
समाज कि परम्परा या संस्कृति को
कहते हैं, जब Redfield लघु परम्परा
के विषय में कहते हैं तब वह
सभ्यता के उस भाग को इशारा
कर रहे होते हैं जो ग्रामीण क्षेत्र में
निवास करती है। इस लघु परम्परा
की कुछ विशेषताएं भी है जिसका
वर्णन Redf निम्नलिखित रूप से
करते हैं।

(1) लघु परम्परा का
निर्माण स्थानीय तथा
ग्रामीण समाज की आवश्यकताओं के
कारण उत्पन्न होती है। यह यहाँ
के किसी स्थानीय व प्रेरक भावनाओं से
भी निर्मित होती है, उदाहरण के लिए
जैसे 'छुड़' स्थानीय
इस परम्परा का भाग बन जाता है

(2) लघु परम्परा ग्रामीण भारत की पहचान है और हम जानते हैं कि लगभग 70% जनसंख्या भारत में ग्रामीण है। इस लिए Redfield ने इस परम्परा को बहुल परम्परा भी कहा है जिसे अधिक संख्या में लोग जानते और अपनाते हैं।

(3) लघु परम्परा की जितनी भी संस्कृति होगी उन्हें कभी भी जनजातीय समुदाय या ग्रामीण समुदाय जानते नहीं हैं तथा इन परम्पराओं का कभी भी विश्लेषण करने का प्रयास नहीं करती है। उनके लिए यह परम्परा पूर्वजों के द्वारा स्थापित धरोहर है जिसे उन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी अपनाया और उपयोगिता। उनकी विश्वसनीयता या उपयोगिता पर कभी भी प्रश्न नहीं उठाया।

(4) लघु परम्परा एक अलिखित परम्परा है। यह ग्रामीण समाज की परम्परा है। यह एक पीढ़ी से दूसरी मौखिक रूप से हस्तांतरित होती रहती पीढ़ी तक एक यह परम्परा मौखिक रूप से सम्मिलित परिवार के स्तर पर परिवार में इस जाता है। एक परिवार का सदस्य शिक्षित करके इन परम्पराओं को यह हस्तांतरण के सहयोग तक होता है। इसी मौखिक ज्ञान संबंधों तक की जीवित रहती है

(३) जो लघु परम्परा तथा [वृहद्] परम्परा के बीच आते जाते रहते हैं और इन्हें Redfi[eld] ने ~~Middle~~ MARGI[NAL] Man की संज्ञा दी है। Realfied ने इसके बाद दीर्घ परम्परा के विषय में भी चर्चा की है और वह

① यह एक शिक्षित वर्ग है और यह परम्परा पुस्तक लिए से आदर्श समाज में देखने को मिलती है।

② दीर्घ परम्परा एक लिखित परम्परा है जहाँ लेखकों के द्वारा एक परम्परा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित किया जाता है। क्योंकि यह आदर्श समाज परम्परा है और अल्प संख्यक समुदाय की पहचान है। इसे कम लोग अपनी परम्परा के अन्तर्गत रखते हैं।

③ दीर्घ परम्परा की संस्कृतियाँ ज्यादातर शिक्षित वर्ग में आती है इसलिए समय २ पर बौद्धिक विशेष विश्लेषण होता रहता है और लोक उसी के अनुसार और आवश्यकता के अनुसार सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन होते रहते हैं। उदा० सती प्रथा का विरोध सर्वप्रथम राजा राम मोहन राय ने किया था जो स्वयं [illegible]

सभ्यता तथा शिक्षा से अत्यंत प्रभावित थे। उस काल में पश्चिमी सभ्यता और पाश्चात्य शिक्षा। द्विज परम्परा का भाग था। द्विज परम्परा में जैसा कि हम जानते है ब्राह्मण समाज के लोग थे। वह पूर्ण रूप में कृषि नहीं करता था। कृषि तथा भोजन इत्यादि लघु परम्परा के लोग करते थे और वहाँ से MARGINL MEN के द्वारा यह द्विज परम्परा तक आता था। द्विज परम्परा चूँकि कृषि नहीं करते हैं इसलिए उनके पास उपलब्ध समय है में अनेक शैक्षणिक, सामाजिक सांस्कृतिक विशेष ध्यान दिया। और द्विज परम्परा का निर्माण हुआ।

(5) इस द्विज परम्परा में भी कुछ ऐसे लोग थे जो पूर्ण रूप से इस समाज के स्थानीय नहीं थे जिसे Redfied ने Marginl Man कहा है।

Man Man ही एक ग्रामीण समाज से तथा ब्राह्मण समाज में भी एक साथ जुड़े हुए थे और शहरी समाज तक लाते थे और सांस्कृतिक उसी प्रकार जब इन सांस्कृतिक होने वाले बार समझ का निर्माण

समाज तक ले जाते थे।
ग्रामीण समाज निम्नलिखित रूप में
इस प्रक्रिया को हम
देख सकते हैं

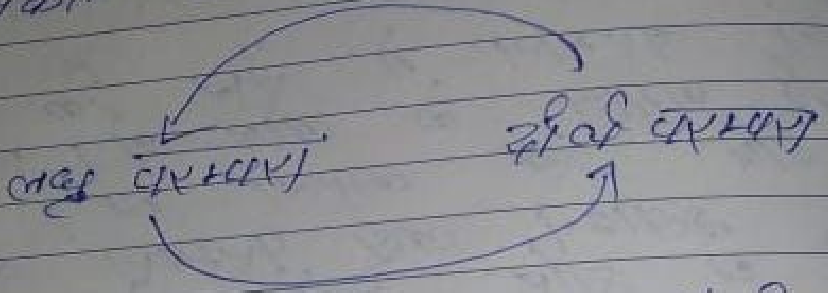

Robert Re कहते हैं कि इस
प्रकार के सांस्कृतिक तत्वों का लगातार
लघु पर से दीर्घ परम्परा और
फिर दीर्घ प से लघु प
पुनः वापस होने का सबसे
सटीक उदाहरण हमें रामलीला के
आयोजनों में देखने को मिलता है।
रामलीला की घटनाएं दीर्घ परम्परा
में विश्लेषित होकर लघु प
में बदलती है और आज रामलीला
का आयोजन उसके नये
रूप में ग्रामीण क्षेत्र में होता है
जिसमें की वो दीर्घ परम्परा में लेता है।

Redfield ने भारतीय परिवेश
को ध्यान में रखते हुए कृषक
समाज, Foke Urban cont तथा
लघु परम्परा एवं दीर्घ परम्परा जैसी

APRIL 2012						
SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

Robert Redfield

भारतीय मानवशास्त्र में इस मानवशास्त्री का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने अनेक ऐसी अवधारणा दी जिससे हम भारतीय समाज को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। उन्होंने भारतीय समाज का अध्ययन करते हुए सबसे प्रमुख अवधारणा Little Tradition तथा Great Tradition यानी दोनों Tradition की अवधारणा दी। किंतु इससे पहले इनका एक और महत्वपूर्ण योगदान है, जहाँ उन्होंने एक ऐसे समाज को ढूंढा जो किसी भी विषय के परिधि में सन 1930 तक नहीं था। यह समाज को हम ~~Peasent~~ Peasent Society या कृषक समाज के नाम से जानते हैं। Robert Redfield से पहले लोग इस कृषक समाज को या ~~Peasent~~ Peasant Society को विशेष रूप से अध्ययन नहीं करते थे। यहाँ यह स्पष्ट कर दें कि इस प्रकार के कृषक समाज पूर्णरूप से खेती पर निर्भर करते थे किन्तु कृषि करने का इनका दो मकसद था। (1) यह कृषि स्वयं के भोजन उत्पादन के लिए करते थे। (2) भोजन के बाद बचे हुए अनाज को वे बाजारी समाज में बेच देते थे।

इस बात से यहाँ यह स्पष्ट होता है कि यह समाज कृषि भोजन उत्पादन के साथ-साथ मुनाफे के लिए भी उत्पादन करता था और यह कृषक समाज जनजातिय समाज या सरल समाज या आदिवासी समाज से भिन्न था क्योंकि आदिवासी समाज भी कृषि करता था लेकिन उनके उत्पादन का मकसद स्वयं के भोजन के लिए ही होता था न कि मुनाफे के लिए।

जैसा कि हम जानते हैं